ments in any specific port can be called violation of the Geneva Agreement. Hence, these complaints run into thousands sometimes. Regarding the two points raised by the hon. Member, such complaints have been made that South Viet-nam has been receiving equipment. South Viet-nam has also made similar complaints about North Viet-nam.

Shri Shree Narayan Das: May I know whether it is a fact that the Government of North Viet-nam has criticised the attitude of India as Chairman of this Commission and, if so, whether there is any real basis for that criticism?

Shrimati Lakshmi Menon: How can anybody accuse India? Because, India has offered its good offices by giving a Chairman to the Commission. Otherwise, we are not directly responsible for anything.

Some Hon. Members *rose*—

Mr. Deputy-Speaker: As a comprehensive reply has been given, need we discuss the detatils, so far as this question is concerned?

Shrimati Renu Chakravartty: With regard to the powers that have been given to the International Supervisory Commission and its members, may I know whether it is a fact that on many occasions when complaints have been made by North Viet-nam, the Commission has pleaded helplessness, in view of the fact that the South Vietnam Government have not co-operated in the enquiry to be undertaken?

Shrimati Lakshmi Menon: That is a matter of opinion.

Shrimati Renu Chakravartty: It is a question of facts. I want to know the facts.

Mr. Deputy-Speaker: The hon. Member wants to know whether, as a matter of fact, they have objected to it.

Shrimati Lakshmi Menon: Whenever a complaint is made, it is the duty of the Commission either to send observers on the spot or receive complaints and then, if there is any serious breach of the agreement, to report it to the Co-chairman.

Shrimati Renu Chakravartty: That is not my question.

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharlal Nehru): There are three members in the Commission. If there is any difference of opinion among the three members, that also naturally prevents its implementation or delays it.

Shri Damani: May I know whether Government have received any communication regarding the convening of the International Commission and, if so, the details thereof?

Shri Jawaharlal Nehru: Which commission? In South Viet-nam it is functioning. There is no question of convening it at all.

Shri Shree Narayan Das: May I know . . .

Mr. Deputy-Speaker: That should be enough. What is the use of going into minor details?

Shri Shree Narayan Das: The hon. Deputy Minister has stated that some of the cases are referred to the co-chairman of the Geneva Conference. I would like to know the number of questions referred to the co-chairmen.

Shrimati Lakshmi Menon: I have no information.

कैलाश तथा मानसरोवर जाने वाले भारतीय तीर्थयात्री

*१६८५. **श्रीभक्त दर्शन** : क्या **प्रधान मंत्री** ८ दिसम्बर, १९६० के तारांकित प्रश्न संख्या ७८१ के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) कैलाश और मानसरोवर के भारतीय तीर्थयात्रियों की कठिनाइयां दूर

कराने और उन्हें अधिक सुविधायें दिलाने के बारे में चीन सरकार से जो पत्र-व्यवहार किया जा रहा था, उसका क्या परिणाम निकला; और

(ख) इस वर्ष यात्रा का जो मौसम प्रारम्भ होने वाला है, उसमें भारतीय तीर्थ-यात्रियों की सहायता के लिये कौन-सी विशेष कार्यवाही की जा रही है ?

वैदेशिक-कार्य मंत्री के सभा-सचिव (श्री सादत अली खां) : (क) १९५४ के भारत-चीन करार में भारतीय तीर्थ-यात्रियों को सुविधायें देने की जो व्यवस्था थी, उसके बारे में हमारे शिकायत-पत्रों का चीन सरकार ने कोई उत्तर नहीं दिया है ।

(ख) तीर्थयात्रियों की प्रार्थना पर, गर्तोक-स्थित भारतीय व्यापार एजेंट जो भी सहायता संभव होगी, उसे देने की व्यवस्था करेंगे ।

I shall read it in English also. z

(a) The Chinese Government have not replied to our representations about grant of facilities to Indian pilgrims as envisaged by the Sino-Indian Agreement of 1954.

(b) The Indian Trade Agent, Gartok will render all possible assistance on being approached by pilgrims.

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, इस समाचार में कहां तक सत्यता है कि चीन की सरकार केवल एक ही दर्रे से भारतीय यात्रियों को जाने की इजाजत दे रही है और यह भी अपनी जिम्मेदारी पर और क्या यह १९५४ के करार के खिलाफ़ नहीं है ? यदि हां, तो इस बारे में क्या कदम उठाये जा रहे हैं ?

प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक कार्य मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू) : जी हां, यह सच है कि चीनी सरकार ने हम से कहा है कि यह बेहतर होगा कि अगर एक रास्ते से लोग आयें । अब यह कहा जा सकता है कि उन्होंने पहले यह तय किया था कि कई रास्तों से आ सकते हैं और अब यह कहा और यह उस दर्जे से नहीं मिलता है । लेकिन जाहिर है कि इसके माने ये हो सकते हैं कि अगर और रास्तों से आयें, तो उनकी हिफाजत करने में उनको दिक्कत होती है और किसी अन्दरूनी दिक्कत का नतीजा होगा यह ।

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, जब यह सूरते-हालात है, तो मैं यह जानना चाहता हूं कि जो भारत के तीर्थ यात्री वहां जाना चाहते हैं, उनको भारत सरकार क्या सलाह देना चाहती है और उनके लिये अपनी ओर से क्या इन्तजाम करना चाहती है ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : भारत सरकार की सलाह यह है कि जहां तक मुमकिन हो, उसी तरफ से जायें, जो कि चीनी सरकार ने कहा है । अगर वे और किसी रास्ते से जाना चाहते हैं, तो अपनी जिम्मेदारी पर जा सकते हैं ।

डा० मा० वी० अणे : सभा-सचिव महोदय ने अपने रेप्लाई में कहा है कि चीनी सरकार से अभी तक कोई जवाब नहीं आया है । मैं पूछना चाहता हूं कि यहां से जो चिट्ठी गई है, वह कौन सी तारीख को गई है । उसको गये कितने दिन हो गये हैं ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : कई बार लिखा गया है । इस वक्त तारीखें तो मेरे पास नहीं हैं ।

Shri Achar: There were paper reports recently that there are disturbing circumstances there and, therefore, those who go there must make their own security arrangements. May I know whether Government will be able to do anything in the matter?

Shri Jawaharlal Nehru: They must make arrangements for security for themselves in those regions.

पंडित द्वा० ना० तिवारी : क्या सरकार को कोई ऐसी सूचना है कि चीन ने जो रास्ता निर्धारित किया है, उसके अलावा दूसरे रास्तों से जो भारतीय गये हैं, उन को खतरा आया है और अगर आया है, तो किस तरह का ? क्या दिक्कतें हुई हैं उनको ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : इसके बारे में कोई खास सूचना तो नहीं है । आम अफ़वाहें हैं ।

श्री भक्त दर्शन : श्रीमन्, समाचारपत्रों के अनुसार अब तक इस सम्बन्ध में जो सूचना मिली है, वह तिब्बत के स्थानीय अधिकारियों (लोकल अथारिटीज़) की तरफ़ से मिली है । चूंकि यह विषय बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए क्या चीन के हाईएस्ट अथारिटी—चीन के प्रधान मंत्री को लिख कर इस मामले को सुलझाने का प्रयत्न किया जायेगा ?

Mr. Deputy-Speaker: It is a suggestion.

राजा महेन्द्र प्रताप : यह सवाल रोज़ रोज़ आता है । इससे यह मालूम होता है कि अभी तक चीन सरकार से हम ठीक से कोई इन्तज़ाम नहीं करा पाये हैं । मैं पेकिंग जा रहा हूं, ऐसी मेरी कोशिश है । क्या यह मुमकिन है कि हम बड़े पैमाने पर चीन के साथ ऐसा समझौता कर लें कि ये झगड़े रोज़ रोज़ के हमेशा के लिये खत्म हो जायें ?

उपाध्यक्ष महोदय : यह राय की बात है जो आपके लिए करना मुमकिन है, दूसरों के लिए न हो ।

Shri Brajeshwar Prasad: Is the route indicated by the Chinese the shortest or the longest route to Manasarovar?

Shri Jawaharlal Nehru: That depends where you start measuring from.

Optical Glass

*1687. **Shri Ajit Singh Sarhadi**: Will the Minister of **Commerce and Industry** be pleased to state:

(a) how far the manufacture of opotical glass has progressed in the country; and

(b) when are we expected to reach self-sufficiency in this respect?

The Minister of Industry (Shri Manubhai Shah): (a) A plant of more than 5 tons per annum capacity has been set up at the Central Glass & Ceramic Research Institute, Calcutta for the production of optical glass. The plant has since gone into production. Of the various types of optical glass required in the country at present, more than half have already been produced in the form of slabs and the remaining types are expected to be made by the end of the current year.

(b) Self-sufficiency in most of the varieties of optical glass is expected to be achieved in 1962.

Shri Ajit Singh Sarhadi: Is any portion of the production in the private sector also?

श्री मनूभाई शाह : यह सारी नैशनल लैबोरटरी जो कलकत्ता में हमारी है, उनकी रिसर्च और इनवैनशन थी और वह वहां बनायेगी ।

Shrimati Renu Chakravartty: The hon. Minister said that self-sufficiency would be attained in almost all types of glasses needed. What are the types that would not be produced and what is the foreign exchange required for their import?

Shri Manubhai Shah: That will be very nominal—perhaps one or two varieties out of 17 or 18 types—because no factory can make all the varieties of all glasses. It will make most of it and imports will be for a nominal foreign exchange.

Shri Indrajit Gupta: May I know whether it is a fact that the Soviet Union had offered us technical know-how for setting up a plant for the manufacture of about 250 types of optical glasses? I would like to know why that proposal was turned down,